आंतर - भारती

हिन्दी मासिक पत्रिका

''आंतर भारती'' स्वप्नद्रष्टा
साने गुरुजी

संस्थाध्यक्ष
ॲड.आनंदमोहन माथुर

प्रेरक, संवर्द्धक-संपादक
स्व.यदुनाथ थत्ते

प्रबंध संपादन कार्यालय
आंतर भारती
साने गुरुजी मार्ग,
औराद शहाजानी - 413 522 (महा.)
ईमेल-antarbharati.patrika@gmail.com

संपादन कार्यालय
द्वारा, डॉ.सी.जय शंकर बाबु
सहायक प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग, पांडीच्चेरी - विश्वविद्यालय, कालापेट, पुदुच्चेरी - 605014
ईमेल-editor.antarbharati@gmail.com

आंतर भारती, साने गुरुजी का एक स्वप्न जो असीम युवा शक्ति की सृजनात्मक उपयोगिता हेतु समर्पित, युवाओं की सम्भाव्यता, प्रवीणता, प्रेरणा व विश्वास के नए आयाम प्रदान करती है.

मुख्य संपादक
प्राचार्य सदाविजय आर्य
09823156777

visit us : antarbharati.org.in

कार्यकारी संपादक
डॉ.सी.जयशंकर बाबु
09843508506

संपादक
डॉ.विजया वारद • ज्योतिराव लढ़के

मार्गदर्शक
एस.एन.सुब्बाराव • पांडुरंग नाडकर्णी • मुरलीधर शहा

सहयोगी
मधुश्री आर्य •गोपाल सत्पुरे
छायाचित्र : स्थानीय फोटोग्राफर

प्रकाशित सामग्री से प्रकाशक / संपादक सहमत ही हैं ऐसा न मानें

ANTAR BHARATI : A dream of Sane Guruji committed to the constructive utilization of boundless Youth Power, gives new dimensions to the Potentiality, Skill, Inspiration & Belief of the youth.

आंतर भारती (मासिक) पत्रिका मुद्रक, प्रकाशक सदाविजय आर्य द्वारा **साईराम ग्राफीक्स**, लातूर से गणेश ऑफसेट, उदगीर हेतु मुद्रित कर आंतर भारती संकुल, औराद शहाजानी से प्रकाशित.

इस अंक में...

संपादकीय - 'नशा मुक्त भारत' की संकल्पना संभव है ? ५

'मंगलायन' की सफलता से वैज्ञानिक मनोवृत्ति का मंगल हो ! ६

आंतर भारती - १ तुका म्हणे ७

आंतर भारती - २ बसववचन ८

आंतर भारती - ३ तिरुवल्लुवर वाणी ९

काव्य भारती - १ पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल १०

आत्म कथन- धुनी तरुणाई : नारी सहभागिता के बिना... ११

चिंतन भारती - १ काला काला है युगबोध १६

समाचार भारती - १ ग्रामीण क्षेत्र में 'संस्कार कक्ष'' का शुभारंभ १९

विशेष आलेख - १ एबोला से सावधान २०

कृति चर्चा - हिंदी साहित्य के इतिहास का लेखन मलयालम में २३

समाचार भारती - २ महाराष्ट्र अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति की विस्तारित कार्यकारिणी बैठक विवरण २७

समाचार भारती - ३ आधुनिक समाज में व्यक्ति जोड़नेवाले समर्पित शिक्षक की आवश्यकता ३०

समाचार भारती - ४ सुलह - हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिए 'बाबरी ते कणेरी' लेखक - हुमायुन मुरसल ''असा ही पाकिस्तान'' - लेखक अरविन्द गोखले पुस्तक प्रकाशन समारोह ३१

हमारा ई-मेल का पता

e-mail : antarbharati.patrika@gmail.com
raavas@rediffmail.com
लेख इस ई-मेल पर भी भेजे जा सकते हैं

आंतर भारती पत्रिका के ग्राहक बने / बनाएँ

संपादकीय...

'नशा मुक्त भारत' की संकल्पना संभव है ?

हाल ही केरल सरकार ने संकल्प किया व तदनुसार आदेश भी जारी कर दिया कि राज्य में शराब की दुकानें व मदिरालय (लिकर बार) बंद कर दिए जाए. (इस निर्णय में कमी यह थी कि बड़े पंच सितारे जैसे होटलों में मदिरालयों पर कोई रोक नहीं लगाया गया.) इस संबंध में समाचार जिस दिन अखबारों में छपा, समाचार कथन के ढंग को देखकर मुझे थोड़ा अजीब भी लगा. एक प्रमुख अंग्रेजी अखबार में इस संबंध में प्रकाशित समाचार की पहली ही पंक्ति का आशय यह था कि बड़े आर्थिक, सामाजिक मुद्दे का नज़रंदाज करते हुए मदिरालयों पर रोक लगा दिया गया है. यह कोई संपादकीय पंक्ति होती तो बात अलग होती. इस रूप में समाचार प्रकाशन के पीछ यह स्पष्ट है कि समाज के जिम्मेदारी तंत्र में सामाजिक विडंबनाओं के प्रति अपेक्षित सही चेतना धीरे-धीरे समाप्त होती जा रही है. जनमत तैयार करने की जिम्मेदारी मीडिया हर पंक्ति में निभा रही है, यह हर्ष की बात होनी चाहिए. मगर यदि ऐसे जनमत की दिशा ही प्रश्नार्थक हो तो ! अराजक तंत्र को जोशीले रूप में जिंदा रखने में सब अपनी भूमिका सुनिश्चित करना चाहते हैं. मदिरालय फलते-फूलते रहें, तब सब ओर संपन्नता अन्यथा अकाल, ऐसी ही मानसिकता बढ़ रही है. देश में सबसे बड़ी संख्या में पढ़े-लिखें लोगों वाले राज्य में फैली शराब की आदतें और उसके कारण हो रहे अकृत्यों, अनाचारों, विडंबनाओं से मुक्ति के लिए केरल सरकार का यह निर्णय स्वागत योग्य था. साक्षरता में नं.१ केरल, देश में मदिरापान की दृष्टि से भी नं.१ ही है. वर्ष २०१२-१३ के दौरान लगभग छः हजार करोड रुपये शराब का कराधन का हिसाब बन पाया था, तो इससे स्पष्ट है कि शराब की लत से भरपूर ग्रस्त है केरल. शराब पर पूरा प्रतिबंध लगाने के लिए सरकार की प्रस्तावित नई नीति पर गंभीर चिंतन हो, और सभी पक्ष इसे समर्थन दें तो केरल के लिए ईश्वर का अपना घर' वाली संज्ञा सार्थक हो सकती है. मगर मदिरालयों पर पूरी तरह से रोक लगाने संबंधी सरकारी नीतियों पर शुरू में ही चारों ओर से अंकुश कसने लगे हैं. वास्तव में पढ़े-लिखे लोगों की अधिकता वाले ऐसे राज्यों का आदर्श कल देश के लिए एक बड़ा आदर्श बन सकता है. तमाम संकुचितताओं की वजह ही आज तक 'नशा मुक्त भारत' की संकल्पना की घोषणा कोई भी सरकार नहीं कर पा रही है.

उसकी नशा मुक्ति में भी है. इस तथ्य को समझने की क्षमता हर किसी में है, मगर एक बड़ा स्वार्थ समाज की अराजकता के लिए कारक बनकर मदिरालयों के फलने-फूलने और बच्चों तक में नशा की लत पैदा करने में सक्षम बन पा रहा है. शासन-पक्ष शराब की बिक्री के माध्यम से आय पर निर्भर होकर कल्याणकारी योजनाओं की घोषणा करने से बढ़कर कोई विवेकहीनता नहीं होती. मगर विगत छः दशकों से देश की यही स्थिति है. नशा मुक्त भारत के लिए दृढ़ संकल्प व इच्छा शक्ति की जरूरत है. कुटिलतापूर्ण स्वार्थ पर कब्र बनाकर ही हम इस संकल्प को साकार बना सकते हैं.

'मंगलायन' की सफलता से वैज्ञानिक मनोवृत्ति का मंगल हो !

बुधवार दि.२४ सितंबर, २०१४ का दिन भारत के अंतरिक्ष अनुसंधान एवं सफल अनुप्रयोगों के इतिहास में उल्लेखनीय तिथि बन गई है. इस दिन मंगल अंतरिक्षयान का मंगल ग्रह की कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित होने पर भारत की जनता के दिलों में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के वैज्ञानिकों की कर्मठता व निष्ठा के प्रति श्रद्धा की भावना प्रस्फुटित हुई है. भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों के प्रति भारतीय मानस में गर्व की भावना की झलक भी महसूस हुई है. पहले ही प्रयास में मंगलयान' की सफलता ने भारतीय वैज्ञानिक बिरादरी में उत्साह भर दिया है. इस उत्साह का, सफल प्रक्षेपण से जन सामान्य में जागृत स्फूर्ति का फायदा सही रूप में हमें लेने की ज़रूरत भी है. रु.४५० करोड़ की लागत वाली इस मिशन की सफलता अमरीका के नासा का मेवेन अंतरिक्षयान (संयोग से जिसका मंगल ग्रह के कक्ष में दाखिला दो दिन पहले अर्थात् दि.२१ सितंबर, २०१४ को सफलपूर्वक हुआ) की तुलना में दस गुणा कम लागत में संभव हो पायी है. भारतीय आर्थिक स्थिति के मद्देनज़र यह भी एक प्रेरक आंकडा है. यह मौका विज्ञान की प्रगति की ओर सबका ध्यान आकर्षित कर ही रहा है. भारतीय संविधान द्वारा संकल्पित वैज्ञानिक मनोवृत्ति को बढ़ावा देने में ऐसे मौके काम में आएं और भावी भारतीय प्रतिभाओं की वैज्ञानिक दृष्टि विकसित होने के साथ-साथ मानवीयता के संरक्षण की विवेकपूर्ण चेतना भी जागृत हो जाए. यही इस अवसर पर मंगलकामना है.

गांधी जयंती सहित आगामी सभी पर्वों के अवसर पर शुभकामनाओं सहित...

- डॉ. सी. जय शंकर बाबु

तुकाम्हणे

पाहुनियां ग्रंथ करावें कीर्तन

पाहुनियां ग्रंथ करावें कीर्तन । तेव्हां आलें जाण फळ त्याचें ।।धृ।।
नाहीं तरि वायां केली तोंडपिटी । उरी ते शेवटी उरलीसे ।।१।।
पढोनियां वेद हरिगुण गावे । ठावें तें जाणावें तेव्हां जालें ।।२।।
तपतीर्थाटणें तेव्हां कार्यसिद्धी । स्थिर राहे बुद्धि हरिच्या नामीं ।।३।।
यागयज्ञादिक काय दानधर्म । मकर फळ नाम कंठीं राहे ।।४।।
तुका म्हणे नको काबाडाचे भरि । पडों सार धरीं हें चि एक ।।५।।

English Translation

Study scriptures and sing glory of the Lord
paahooniyaan grantha karaaven keertana

It is only after a proper study of the scriptures
That one should sing the glory of the Lord.
Othewise it will be only a babble of words.
As the heart is not involved!

Learn the Vedas and sing to the glory of God
That would be real knowledge

Visiting sanctified places and practising severe penance
Perfoming religious rituals and offering alms to the needy
And singing the gloy of God brings forth the right fruits.
Thus should one constantly recite the sacred Name.

Says TUKA, do not observe rituals blindly
Hold on to the essence of the sacred Name

English : D.S.VAJRAM
3, Praram, Lakaki Rasta, Pune - 411016

महात्मा बसवेश्वर वचन

- डॉ.इरेश स्वामी

मूळ कन्नड वचन :

तनुव कोट्टु गुरूवनोलिसबेकु
मनव कोट्टु लिंगव नोलिस बेकु
धनव कोट्टु जंगम नोलिस बेकु
ई त्रिविधव् होरगु माडि हरय होयिसि
कुरूह पूजिसुववर मेच्च कूडलसंगम देव

हिन्दी काव्यानुवाद :

शरीर देकर गुरु को प्रसन्न करना चाहिए ।
मन देकर लिंग को प्रसन्न करना चाहिए ।
धन देकर जंगम को प्रसन्न करना चाहिए ।
इन तीनों को बाहर कर हर को समर्पित कर।
लिंग पूजा जबतक नहीं करते,
तब तक कूडल संगम देव प्रसन्न नहीं होते ।

भाष्य : तन, मन, धन देकर जब तक आप शिव स्वरूप होनेवालें गुरु लिंग जंगम की पूजा नहीं करते तब तक कूडल संगम देव प्रसन्न नहीं होते । ईश्वर निर्गुण निराकार है । उसे सगुण साकार रूप में देखना हो तो गुरू लिंग जंगम में देखो । उन्हें तन देकर गुरु को मन देकर (मन लगाकर) लिंग को और धन देकर (दान करते हुए) जंगम को प्रसन्न करना चाहिए. जब तक इस प्रकार त्रिविध (तीन प्रकार से) पूजा नहीं करते कूडल संगम देव अर्थात् ईश्वर प्रसन्न नहीं होते ।

तात्पर्य अपने पास जो कुछ है वह देकर ईश्वर को (जिसने दिया है उसी को) सौंपकर आनंदित होना चाहिए ।

-'विद्या' १२, ब्रह्मचैतन्य नगर
विजापूर रोड, सोलापूर - ४१३००४ (महा.)

तिरुवल्लुवर वाणी

तिरुक्कुरल

तमिलमूल - संत तिरुवल्लुवर
देवनागरी लिप्यांतरण एवं हिंदी हाइकु अनुवाद -
डॉ.सी.जय शंकर बाबु

प्रथम खंड - अरत्तुपाल (धर्म खंड)

इल्लऱविमल् (गृहस्थ-धर्म)

अध्याय - ७. मक्कट् पेरु (संतान प्राप्ति)

तम्पोरुळ् एन्बतम मक्कळ् अवरपोरुळ्

तम्तम् विनैमान् वरुम् । (कुरल - ६३)

बच्चे नर की

संपत्ति ; देते फल

गुण कर्मों से ।

भावार्थ - इन्सान की सच्ची दौलन बच्चे ही हैं । उनके गुण-कर्मों का फल ही इन्सान को मिलता है ।

अमिऴिदनुम् आट्र इनिदेतम् मक्कळ्

शिऱुकै अळाविम कूळ् । (कुरल - ६४)

अमृत-सा हो

अन्न ; बच्चे नन्हें से

हाथ लगाए ।

भावार्थ - अमृततुल्य स्वाद भर जाता है उस भोजन में जिसमें अपने बच्चे नन्हें हाथ लगाते हैं । गुण कर्मों से ।

पर्यटन केंद्र एवं तीर्थस्थल

- टी.ई.एस.राघवन

चेन्नै

चेन्नई में ‘जारज किला’, ‘कला क्षेत्र’ औ ‘बाचे’ ।
मंदिर शिव औ विष्णु के नित लेते हैं खींच ।।
तमिलनाड़ का मुख्य पुर, ‘चेन्नै’ से विख्यात ।
आवाज मिल की यहाँ, सुन पड़ती दिन-रात ।
वायुयान औ रेलवे, सेवा में तैयार ।
आटो टेक्सी औ बसें, नित करती संचार ।।
चेन्नई में विश्वविद्यालय, है सागर के तीर ।
चेन्नई में करते वास, गरीब और अमीर ।।
चेन्नई में कृत्रिम रूप विलसे बंदरगाह ।
वीथि द्वीप से यहाँ की दिखती संयक राह ।।
रहती है महाबलिपुर चेन्नईपुर के पास ।
शिल्प-कला का यहाँ तो होता रहे विकास ।।

- १, हनुमंतरायन मंदिर मली, ट्रिप्लिकेन, चेन्नै - ६०००0७

आन्तर भारती के प्रकाशन

साने गुरुजी चित्रावली - १२० रु.
यति यदुनाथ - ५० रु.
साने गुरुजी विशेषांक - ५० रु.
आन्तर भारती गीतमाला -१५ रु.
कॅसेट / सी.डी. - ३० रु.
प्राप्ति स्थान : आंतर भारती संकुल
औराद शहाजानी - ४१३५२२ (महा.)
Mo. 09823156777 E-mail : aryavidyavanshi@gmail.com

आत्म कथन : धुनी तरुणाई

नारी सहभागिता के बिना...

- अरुणा तिवारी*

मेरा जन्म मारवाडी ब्राह्मण परिवार में हुआ. मेरी माँ का नाम था यशोदा और पिताजी का शंकरलाल रतनलाल तिवारी. मेरा बचपन खानदेश के शहर जलगांव में बीता. हमारे घर का माहौल काफी श्रद्धायुक्त था. पिताजी नियमितरूप से पूजाअर्चा करते थे और मां हमारे समाज की सभी प्रकार की रुढियों को आचरण में लाती थी. परिवार में सभी प्रकार के उपवास, त्यौहार बडे उत्साह से मनाए जाते थे. परिवार में मेरी सगी दादी नहीं थी. लेकिन मेरे पिताजी की मौसी, मामी, मामा तथा ममेरा भाई यह सारा परिवार मेरे लिए दादा-दादी के स्थान पर था. मेरी ये दोनों दादियाँ काफी कर्मठ थीं. उन दिनों ब्राह्मण परिवार में जो छूतछात का पालन होता था उन सबका अनुभव मैंने मेरे इन दोनों दादियों के साथ लिया. इसमें कुछ अनुचित है या नहीं. इस विषय में उस समय कभी कोई विचार आने की स्मृति नहीं है. यह सब उस सहज और स्वाभाविक लगता चूंकि यह सब बचपन से ही देखते आयी थी.

लेकिन इधर माँ-पिताजी की ओर काफी अलग वातावरण था. हमारे अडोसी-पडोसी सभी जाति-धर्म के थे. वैसी हमारे मारवाडी समाज के पडोसियों की संख्या अधिक थी. हमारे घर थोडा अलग वातावरण था ऐसा कहने के पीछे कारण यह था कि हमारी माँ भले ही पढी-लिखी नहीं थी फिर भी काफी पढती रहती थी. उसके पठन में तत्काल पॉकेट बुक्स प्रकार होते थे. साथ-साथ उसको सिनेमा और सिनेमा के गीतों के साथ भी भारी लगाव था. उस जमाने के सिनेमा, समाज में व्याप्त अन्यायकारक बातों को प्रकाश में लानेवाले होते थे. सिने संगीत में भी सामाजिक विषय काफी कुछ व्यक्त होते थे.

जलगांव की जिस बस्ती में मेरा बचपन बिता वह हिस्सा, सुशिक्षित समाज कही दृष्टि से पिछडा माना जाता था. परन्तु मेरी दृष्टि से इसी हिस्से में सांस्कृतिक समृद्धि थी. हमारी गली में सभी त्यौहार उत्साह के साथ तथा पारंपारिक ढंग से मनाए जाते थे. श्रावण मास से त्याहारों की शुरुआत होती थी. नागपंचमी के हिंडोले, नाग की पूजा, जागरण मेंहदी, हरतालिका, गणेशोत्सव, भूलाबाई (भोडला-अश्विन में लडकियों का एक उत्सव), आषाढी

एकादशी, इन मराठी त्यौहारों के साथ ही हमारे समाज के गणगौरे, छोटी तीज, बडी तीज आदि त्यौहारों में भी हमारे सभी पडोसी शामिल होते थे. श्राद्धपक्ष में मेरे पिताजी पूरी भाई-बिरादरी को हमारे घर बुलाते थे. दीपावली में तो मेरी माँ का उत्साह उफान पर होता था. दसरे के पहले ही उसका आरंभ होता था. सर्वप्रथम मिट्टी एकत्र कर आंगन व्यवस्थित करना और चबुतरा बनाना. प्रतिदिन गोबर इकट्‌ठा कर गोबर-मिट्टी के पानी का आंगन में छिड़काव तथा पुताई, रंगोली सजाना आदि बातें वह बडे उत्साह से करती थी. इस कारण हमारा आंगन बडा होने पर भी शोभायमान दिखता था. माँ की सहेलियाँ अर्थात नवाबाई, गयाबाई, बडिया तथा अन्य सभी अपने-अपने आंगन सुन्दर व्यवस्थित करती थीं. दसरे के दस दिन पहले से हमारे वहाँ स्वांग निकलते थे. इस विधा में पुरुष पात्र होता है. उसके चेहरे पर सिंदूर लगाकर सिर पर मुकुट रखकर, काजल से आँखों को सजाकर देवी का रूप धारण किया जाता है. यह पात्र फिर गली-गली में पहचान के घर-आंगन में नाच दिखाता है. साथ में उस समय का बाजा होता ही था. उस देवी के हाथ में अपने शिशु को नचाने से बच्चे को दीर्घायुष्य प्राप्त होता है, ऐसा माना जाता था. दिवाली के चार दिन बाद ग्यारह दिनों तक यात्रा-पालकी निकलती थी और कार्तिक एकादशी को रथ यात्रा निकाली जाती थी. रथयात्रा का स्वागत हमारी गली में खड़ी मस्जिद से होता था. इस स्वागत के बिना रथ आगे नहीं बढता था. गणपति उत्सव के समय रंजाताई (दशरथ-डाकवे) की ओर गणपति की सजावट तथा कोजागिरी का रातजगा होता था तो प्रतापभाई की ओर गली की बहनों के लिए तीज, हरतालिका और अखाजी (अक्षय तृतिया) के दिन झुले बांधने की गडबड रहती थी. बचपन में हमारे समाज में पंधरा-पंधरा दिन तक चलनेवाली शादियाँ भी मैंने देखी हैं. शादी के पहले कई दिनों तक रातीजोगा होते रहता है और उस समय सभी रिश्तेदार औरतें मिलकर दुल्हा-दुलहन (बन्ना-बन्नी) के लिए गाना, हल्दी चढाना आदि प्रकार चलते थे.

यह सब विस्तार से लिखने का कारण यह है कि मेरे परिवार में जिस तरह मारवाडी समाज के त्यौहार मनाये जाते थे उसी तरह पास -पडोस में बसे राठी समाज के साथ एका होने से आषाढी एकादशी, चंपाषष्ठी, हरतालिका, कोजागिरी, गुलाबाई, भोंडला, अखाजी आदि भी नाए जाते थे. हम हमारे घर में जिस तरह तीज और उतछट के उपवास रखते थे उसी तरह हरतालिका का भी रखते थे. तीज, उतछटला की कथाएँ बडी मां सुनाती थी, उन्हे बडे

मनोभाव से सुनते थे. उसी मनोभाव से हरतालिका की कथा भी श्रवण करते थे. पास ही मुस्लिम बस्ती भी थी. ईद-बकरीद, मोहरम आदि त्यौहार भी मनाय जाते हुए देखे हैं. जिस तरह दीपावली में हमारे यहां सारे घर की सफाई, बर्तनों आदि वस्तुओं की सफाई, रंगरोगन, आंगन पोतना आदि चलते रहता है, उसी तरह मुस्लिम बस्ती में भी ईद के समय होता था. मोहरम के समय अलग-अलग स्वांयवाली फेरियाँ निकलती थीं. डोल (ताजिया) बनाए जाते थे और डोलों के विसर्जन की फेरियाँ निकाली जाति थीं.

आर्थिक दृष्टि से हमारा परिवार खा-पीकर सुखी था. आस-पडोस में एक-दो अमीर परिवारों के साथ कुछ परिवार काफी गरीब भी थे.

हमारी गली के संदर्भ में भूतकाळ का उपयोग करने का कारण यह है कि आज उन व्यक्तियों में से काफी या तो जिन्दे नहीं हैं या वास्तव्य के लिए अन्य स्थानांतरित हुए हैं. गली का स्वरूप भी काफी कुछ बदला गया है. आजु-बाजु यह सब घटित होते-होतेमैं भी गढी जा रही थी. पूरा करना, मंदिर जाना, उपवास करना आदि करती थी. यह सब करते समय अन्यों के प्रति अस्पृश्यता की भावना मेरे समाज में विद्यमान थी. लेकिन मेरी दृष्टि में यह बात मेरे घर में उतनी कडाई से मानी नहीं जाती थी. फिर भी ऐसी जिन किसी भी रुढियों का अस्तित्व था वे भी शिक्षा के साथ-साथ समाप्त होती गयीं. घर में औरों के लिए अलग बर्तन रखे जाते थे. आगे यह प्रथा बंद हुई. मेरी शिक्षा के साथ-साथ मुझमें और मेरे घर में बदल होता गया.

छुट्टियों में मैं हमेशा मेरी मौसी के घर जाती थी. एक बार उस गांव में एक स्थान पर आग लगी. उसे बुझाने मैंने जो भागदौड़ की उसका तब गांव में बडा कोतुक हुआ.

उन दिनों लडकी की पढाई तभी तक होती थी जब तक वह अनुत्तीर्ण नहीं होती या फिर विवाह होने तक. आम तौर पर सातवीं कक्षा पास होने पर लड़की की शादी की बात छेडी जाती थी. वही मेरे प्रति भी हुआ. मैंने अपनी इच्छा व्यक्त की, मुझे आगे पढना है. जिद करने पर आगे पढने की अनुमति मिली. मैं दसवीं कक्षा अर्थात मॅट्रिक फर्स्ट क्लास में पास हुई (हमारी गली में मैं प्रथम लडकी थी जिसने दसवीं कक्षा पास की थी और हमारे समाज में दूसरी, जो आगे ग्रॅज्युएट हुई) फिर विवाह का विषय सामने आया. मैंने पढाईकी जिद चालू रखी. इस तरह चलते मैंने ला.ना.हायस्कूल में सायन्स विभाग की ग्यारहवीं कक्षा में प्रवेश लिया. ला.ना.स्कूल की ग्यारहवीं सायन्स कक्षा में हम छह

छात्राएँ ही थीं. वहीं मेरा वाहिनी के साथ परिचय हुआ. वासन्ती और रत्ना ने मुझे सेवादल का पाठ दिया. मैं सेवादल की शाखाओं में गंदी बस्ती के काम के लिए जाने लगी. उस समय पटना में वाहिनी का शिविर था. वहां भी हम तीनों गयी थीं. वहीं वाहिनी की संपूर्ण क्रांति के तत्वों का मेरे मन में बीजारोपण हुआ. 'जनेऊ तोडो, मानव से मानव को जोडो' जैसे नारों ने समाज में व्याप्त जाति-अलगाव का परिचय भी करवाया और उन्हें मिटाने की प्रेरणा भी दी. 'लहू का रंग एक है, अमीर क्या गरीब क्या...' जैसे गानों ने समान में विद्यमान आर्थिक खाई के प्रति गहराई तक सचेत कर दिया. यह खाई पाटने के लिए संघर्ष करने की जिद भी पैदा की. इ स शिविर के बाद वाहिनी के अभ्यास मंडल में नियमित रूप से जाना शुरू हुआ. वहां शेखर के भाषण सुनती थी. इसके अलावा उस समय वाहिनी का मध्यवर्ति कार्यालय शेखर के घर में ही था. वहां पूरा समय कार्यकर्ताओं का आना-जाना चलते ही रहता था. अमर हबीब, चन्द्रकान्त जाधव, चन्द्रकान्त वानखडे, मोहन आदि सभी के भाषण सुनना, चर्चा सुनना ये बातें भी चलती रहतीं. उस समय जलगांव में हमारा बड़ा ग्रुप था और वाहिनी के नाम का दबदबा भी. उस दरम्यान हम जलगाव जिले में दहेज विराधी मिटिंग्ज लेते थे. उसमें मैं रमेश बोरोले के साथ सक्रिय भाग लेती थी. इसके सिवाय दहेजबलि के प्रति विरोध प्रदर्शित करने भुसावल में एक मार्च निकला था. उसमें मेरा सक्रिय सहभाग था. वहीं इस विचार का बीजारोपन मन में हुआ कि न दहेज दूंगी न दहेज मांगनेवाले से विवाह करूंगी. वाहिनी के सभी शिविरों में सहभाग होने से संपूर्ण क्रांति के सार तत्व मन की गहराई में अंखुआए.

'नारी के सहभाग बिना हर बदलाव अधुरा है.' इस घोषणा ने तथा उसके पीछे होनेवाली विचारधारा ने स्त्रियों का समाज में स्थान और उसमें बदल होने की आवश्यकता ये सारी बातें मन में साफ होने लगीं. हम उन दिनों मराठवाडा विद्यापीठ नामांतर आंदोलन का भी सक्रिय हिस्सा थे. वाहिनी के साथ-साथ गठन होने के दरम्यान ही रजिया का हमारे घर में प्रवेश हुआ. हमारे घर में वैसे भी, कार्यकर्ता भोजन के लिए आते थे और तेरी माँ सभी बच्चों के लिए बिना उकताए व्यवस्थित खाना बनाती थी. रजिया का हमारे घर में प्रवेश हमारे घर में हुए बदलाव का उत्तुंग बिन्दु कहना चाहिए. एक कर्मठ ब्राह्मण परिवार से एक धर्मानिरपेक्ष परिवार में रूपांतर, ऐसा इस यात्रा को कहना होगा. माँ ने रजिया

को अपनी बेटी जैसा हमारे परिवार में अपना लिया. उसी दरम्यान मुस्लिम महिलाओं पर सिनेमाबंदी थोपी गयी थी. उस समय रजिया जलगांव में ही थी. वाहिनी के रूप में हमारा ग्रुप चैन से बैठा रहे यह असंभव था. शेखर और वाहिनी के जलगांव के सभी कार्यकर्ताओं ने मोर्चे संभाले. रजिया तथा मैंने महिलाओं में जाकर सिनेमाबंदी तोडने के आंदोलन को सफल बनाया. इस तरह के ये सब आंदोलन शुरू रहते समय पढना भी चालु था. अन्तुर यह था कि सायन्स के स्थान पर अब बी.ए. की तरफ यात्रा शुरु हो गयी थी. बी.ए. करते समय ही बेंक की नौकरी के लिए फॉर्म भरा बेंक में नौकरी भी मिल गयी. बेंक की नौकरी लगने के बाद बेंक के ही एक व्यक्ति की मध्यस्थता से बेंक अधिकारी के साथ विवाह का प्रस्ताव आया. जाति अंतर्गत विवाह नहीं करना, यह निर्णय तब तक पक्का हो चुका था. इस कारण उस प्रस्ताव को नकार दिया. इंदूताई केळकर मार्फत डॉ. चौधरी के पास अन्वर संबंधी प्रस्ताव आया. जिस समय वासती ने अन्वर के विषय में बताया उस समय किसी मुस्लिम युवक से विवाह करने का कोई भी विचार मास्तिष्क में नहीं था. केवल मुस्लिम होने के कारण नकार देने के स्थान पर अन्वर से मिलने की बात सोची. अन्वर से मुलाकात के बाद उसके व्यक्तित्व में ऐसा कुछ नहीं था कि नकारा जाए. वह आपात्काल के दरम्यान येरवडा जेल में रहकर आया था. दोनों युवक क्रांति दल में ही गढे होने कारण विचारों में समानता थी. वह मुस्लिम संशोधक मंडल का कार्यकर्ता था. इस पूरी पार्श्वभूमि पर भी सभी बातें जुडने लायक थी. बाद के कुछ महिनों में उससे अच्छा परिचय होने के बाद शादी का निर्णय लिया. विवाह के बाद पुना आयी. विवाह, नौकरी, संसार और स्वास्थ संबंधी किचकिच में आगे धीरे-धीरे सामाजिक कार्य से किनारा होता गया. फिर भी चैन से बैठा नहीं रहा जाता था. इस कारण श्रमिक महिला मोर्चा के पारिवारिक सलाह केन्द्र में कई सालों तक समुपदेशक के तौर पर काम करती रही. लेकिन शायद अभी मुझमें घुला कार्यकर्ता शांत हो चुका है या फिर नौकरी के उत्तरदायित्वों में हुई वृद्धि ने कार्यकर्ता को शांत किया हो. **(धुनी तरुणाई से क्रमशः.....)**

*लेखिका जे.पी.आंदोलन से संबद्ध युवा संघर्ष वाहिनी से जुड़ी रही ।

धुनी तरूणाई (मराठी में)
संपादक : मिलिन्द बोकील और अमर हबीब
पृष्ठ १६०, कीमत १५० रु.
प्रकाशक :परिसर प्रकाशन, अंबेजोगाई -४३१५१७ (महा.)

अनुवादक
ज्योतिराव लढके
चेतस, २२, बाजीप्रभु नगर,
नागपुर -४४००३३

चिंतन भारती - ९

काला काला है युगबोध

- चिन्मय मिश्र

मनुष्य की कोई कथा कहे भंते

मनुष्य की कथा कैसे संभव है आनंद? उसके पास दुःख ही दुःख हैं.

तब देवताओं की कथा कहें, भंते.

देवताओं के पास सुख है, आनंद. कथा, उनके पास भी नहीं है.

भगवान बुद्ध एवं आनंद के बीच का यह संवाद पिछले ढाई हजार वर्षों से हमारे कानों में गूंज रहा है. वहीं पिछले चार आम चुनावों में अर्थात तकरीबन पंद्रह वर्षों में हम एनडीए और यूपीए दोनों को एक से अधिक बार शासन करते देख चुके हैं. बिना यह वर्गीकरण किए कि इनमें से कौन मनुष्य है और कौन देवता, यह तो कहा ही जा सकता है कि कथा यानि जनकल्याण की कोई सोच दोनों के पास नहीं है. बात इंडिया शायनिंग से शुरू हुई और बरास्ता भारत निर्माण कड़वी गोली से अच्छे दिन लाने की कवायद पर खत्म हो गई और सारी उठापटक जबानी जमाखर्च से अधिक कहीं नहीं पहुंची. इस बीच मोदी सरकार ने यूपीए सरकार का लंबित फैसला जो कि रेल किराए में वृद्धि को लेकर था, लागू कर दिया और २५ जून की मध्यराषि से यात्री भाड़े में १४.२ प्रतिशत व माल भाड़े में ६.५ प्रतिशत की वृद्धि कर दी गई. गौरतलब है यही वह दिन है जिस दिन ४० वर्ष पूर्व सन् १९७५ में इंदिरा गांधी ने आपातकाल की घोषणा की थी.

रेल्वे का किराया और माल भाड़ा बढ़ाने के पीछे यह तर्क दिया जा रहा है कि इससे करीब ८ हजार करोड़ रु. की अतिरिक्त आय होगी, जिससे रेलवे की सुरक्षा व सुविधा दोनों में वृद्धि की जा सकेगी. कोढ़ में खाज, इसी दिन दिल्ली से डिब्रुगढ़ जा रही राजधानी एक्सप्रेस बिहार में छपरा के निकट बेपटरी हो गई और ५ लोग मारे गए. यानि अब तो कोई यह कहने का साहस ही नहीं जुटा पाएगा कि किराया व भाड़ा में वृद्धि न की जाए. जबकि वास्तविकता यह है कि नई सरकार ने विकास की धारा चुनने और उसके लिए आवश्यक धन प्रवाह हेतु नए सिरे से मंथन करने की आवश्यकता ही महसूस नहीं की. इसीलिए

पूर्ववर्ती सरकार द्वारा नियत रेल किराया वृद्धि को अपनाने के बाद कार व उपभोक्ता वस्तुओं पर छूट अगले छः महीने तक के लिए बढ़ा दी. यानि पेट्रोल के बढ़ते दामों, सड़कों पर बढ़ते यातायात व देशभर में फैले बिजली संकट के बावजूद उपभोग पर नियंत्रण की आवश्यकता महसूस नहीं की गई.

इस बार के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता केदारनाथ सिंह ने लिखा है

काली मिट्टी काले घर, दिनभर बैठे ठाले घर,

काली नदियां काला धन, सूख रहे हैं सारे बन.

एक ओर जहां रेलवे को महज आठ हजार करोड़ रु. उपलब्ध कराने के लिए करोड़ों गरीब यात्रियों से धन की उगाही की जा रही है. वहीं दूसरी ओर इस देश के मात्र नौ कारपोरेट घरानों पर खराब ऋण के रूप में बैंक का १९२१७.५० करोड़ रु. बकाया है. गौरतलब है ये वे नौ घराने हैं जिन पर ११०० करोड़ रु. से लेकर ३६७२.६० करोड़ रु. तक बकाया है. ६ मई २०१४ को ऑल इंडिया बैंक एम्प्लाईज एसोसिएशन के चेन्नई स्थित केंद्रीय कार्यालय ने सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों के ४०० सबसे अधिक ऋण चूककर्ताओं की सूची जारी की थी. इनके खातों में करीब ७०,३०० करोड़ रु. फसे हुए हैं. इनमें से कई को जानबूझकर ऋण वापस न करने वाला (विलफुल डिफाल्टर्स) की संज्ञा दी गई है. इस सूची में स्टर्लिंग बायोटेक व इसकी अन्य कंपनियां (३६७२.६० करोड़ रु.), विनसम डायमंड एंड ज्वेल (३१५६.६२ करोड़ रु.), किंगफिशर एयरलाइंस लि. (२६७३.२४ करोड़ रु.), इलेक्ट्रोथर्म (इंडिया) (२२११.४२ करोड़ रु.), जूम डेवलपर्स (१८०९.१८ करोड़ रु.) एवं एस कुमार्स समूह (१७५८.२४ करोड़ रु.) शामिल हैं.

ऐसी उम्मीद की जा रही थी कि नई सरकार थोड़ी सांस लेकर नए सिरे से अपनी योजनाओं को गढ़ेगी और कुछ साहसिक कदम उठाएगी. लेकिन विदेशी बैंकों में जमा कालाधन लाने हेतु सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश पर न्यायमूर्ति शाह समिति का गठन कर सरकार ने अपने कर्त्तव्य की इतिश्री कर ली. देश के अंदर के काले धन या सार्वजनिक बैंकों के डूबत ऋण की वसूली के माध्यम से अर्थव्यवस्था के सुधार की उसने कोई कोशिश नहीं की. एसोसिएशन ने यह भी बताया था कि मार्च २००८ में सार्वजनिक बैंकों के खराब ऋणों की राशि ३९,००० करोड़ थी जो मार्च २०१३ में बढ़कर १,६४,००० करोड़ एवं इसी वर्ष

सितंबर में २,३६,००० करोड़ हो गई थी. इस बीच इन खराब ऋणों का पुर्नगठन कर दिया गया और करीब ३,२५,००० करोड़ रु. अच्छे ऋण के रूप में दिखाई देने लगे. सूची में दिए गए अन्य आंकड़ों को छोड़ इस बात पर गौर करें कि पिछले १३ वर्षों में बट्टे खाते में डाले गए खराब ऋणों की राशि २,०४,००० करोड़ है. यानि यह बीमारी पिछली एनडीए सरकार से लेकर सन् २०१४ में चुनी गई नई एनडीए सरकार तक बदस्तूर जारी है. वहीं हम सबको कड़वी दवाई पीने की हिदायत दी जा रही है लेकिन यह नहीं बताया जा रहा है कि इस गोली को बनाया किसने और इसकी खुराक कितनी होगी?

केदारनाथ सिंह लिखते हैं,

काला सूरज काले हाथ, झुके हुए हैं सारे माथ

काली बहसें काला न्याय, खाली मेज पी रही चाय.

नई सरकार ने शपथ के बाद दावा किया था कि वह संघीय ढांचे को मजबूत बनाएगी और सभी राज्य सरकारों को विश्वास में लेगी. प्रधानमंषी पड़ौसी देशों के राष्ट्र प्रमुखों से तो चर्चा कर चुके हैं लेकिन उन्होंने राज्यों के मुख्यमंत्रियों का एक सम्मेलन बुलाने की पहल नहीं की जिससे कि कम से कम प्रतीकात्मक तौर पर यह संदेश जाता कि नीति निर्धारण में उनकी भूमिका को भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है. एक बेहतर शासन व्यवस्था के लिए शायद यह महत्वपूर्ण पहल होती. वहीं इसके उलट योजना आयोग जैसी संस्थाओं में सुधार के बजाए इन्हें विलोपित किए जाने की मुहीम चलाई जा रही है. सारा कार्य वित्त मंत्रालय के माध्यम से किए जाने की वकालत की जा रही है. इससे केंद्र सरकार का शिकंजा और मजबूत हो जाएगा और अंततः राज्य सरकारों को झुकना ही पड़ेगा. अपनी तमाम कमजोरियों के बावजूद योजना आयोग पर भेदभाव के बहुत कम आरोप लगे हैं.

शासन संभालने के एक माह के भीतर ही महंगाई पुनः आसमान छूने लगी है और नए मंत्रीगण भी वही सब दोहरा रहे हैं जो कि यूपीए के कार्यकाल में कहा जाता था. गौरतलब है कि भारतीय जनता ने सिर्फ सत्ता परिवर्तन के लिए नहीं बल्कि नीतियों व प्रशासन में परिवर्तन के लिए मत दिया था. वर्तमान रेल प्रणाली को ठीक न करते हुए बुलेट ट्रेन के सपने दिखाना, विद्यमान औद्योगिक क्षेत्रों का युक्तियुक्तकरण किए बिना नए औद्योगिक केंद्रों की स्थापना करना व

शिक्षा व स्वास्थ्य जैसे महत्वपूर्ण विषयों को पार्श्व में रखकर केवल विदेशी प्रत्यक्ष निवेश की नई परिभाषाएं गढ़ना वस्तुत: किसी परिवर्तन का नहीं बल्कि दिशाहीनता का सूचक दिखाई पड़ रहा है. पिछली सरकार द्वारा रेल किराया बढ़ाने के प्रस्ताव को मंजूरी देने और उसी सरकार द्वारा नियुक्त राज्यपालों को हटाने के निर्णय से इस सरकार की कथनी और करनी का अंतर साफ दिखाई दे रहा है. यह भी स्पष्ट हो गया है कि कोई भी राजनीतिक दल अनैतिकता की निरंतरता को रोकना ही नहीं चाहता.

आज सुबह सब्जी खरीदते वक्त सब्जी बेचने वाले से जब आलू का भाव पूछा तो उसने मुस्कराते हुए कहा, ''बाबूजी अच्छे दिन आ गए हैं. आलू ३० रु. किलो, मिर्ची और धनिया १०० रु. किलो हो गए हैं.'' सुनने में यह बात मजाक सी जान पड़ती हो लेकिन यदि भाव बढ़ने से उसे बेचने वाला तक बेचैन हो उठा हो तो स्थिति की गंभीरता का सहज अंदाजा लगाया जा सकता है. पिछले एक महीने में सकारात्मक बदलाव का अभाव सा नजर आया है. नई सरकार को बजाए हड़बड़ी के थोड़ा समय इस देश की समस्याओं के हल एक प्रशासक की तरह निकालने के तरीकों की खोज में बिताना चाहिए. वरना केदारनाथ सिंह ने तो कहा ही है

काले अक्षर काली रात, कौन करे अब किससे बात,
काली जनता काला क्रोध, काला काला है युगबोध.

समाचार भारती-१

ग्रामीण क्षेत्र में 'संस्कार कक्ष' का शुभारंभ -

आंतर भारती बिरादरी एवं सेवा संस्कार केन्द्र के संयुक्त तत्वाधान में इंदौर जिला स्थित बाईग्राम में संस्कार का शुभारंभ मुख्य अतिथि श्री विजयसिंह भरकतिया (संस्थापक समीरमल भरकतिया, चेरीटेबल ट्रस्ट, इंदौर) एवं श्री कृष्ण कुमार जी अष्ठाना (देवपुत्र के संपादक) की अध्यक्षता में हुआ.

उपरोक्त कार्यक्रम नैतिक एवं सामाजिक उत्थान हेतु आन्तर भारती बिरादरी शाखा - बाईग्राम परिसर में हुआ. विगत एक माह से सिमरोल, बाईग्राम, गाजिंदा एवं चोरल के शासकीय माध्यमिक विद्यालय के लगभग ४० बच्चों को सर्वधर्म प्रार्थना, देशभक्ति गीत, घोषणाएं (नारे) व नमस्कार मंत्र इत्यादि का

(पृष्ठ २५ पर...)

विशेष आलेख - १

एबोला से सावधान !
(वायु में एबोला)

आज जब सारी दुनिया एबोला के डर में पड़ गया है सयेरा लेयोन देश ने एक दल बनाया है, ये ज़रूर ध्यान देने के लिए कि संक्रमित व्यक्ति और परिवार के सदस्यों को अलग ही रखा जाय और ब्रिटीश विमान सेवा ने इन देशों की ओर हवाई जहाज़ों को निलंबित भी किया है। पहली बार एबोला १९७६ में एक साथ यम्बुकु गाँव और उसके आसपास के जगहों पर पायी गयी थी। ये प्रांत जैरा में एबोला नदी के पास है जो वर्तमान कांगो प्रजातांत्रिक गणतंत्र एवं सुड़न के नज़रा में है। तब से एबोला वाइरस का एक-एक करके इन्सान और जानवरों के शरीर में लक्षण प्रकट होने लगे।

एबोला जीवाणु रोग (ई वी डी) पहले एबोला हेमोरेजिक फीवर(एबोला एच एफ) के नाम से जाना जाता था। यह इन्सान, वानरगण- जैसे बन्दर, गोरील्ला, चिम्पान्जी आदी जीवों में फैलनेवाला खतरनाक रोग है। एबोला कई तरह के वाईरल रक्तस्रावी बुखारों(वी एच एफ) में से एक है जिसके संक्रमण का कारण फिलोवाइराइड परिवार के एबोला जेनुस वाइरस है, जिसमें मृत्युदर ९० प्रतिशत है। इस रोग से पीड़ित लोगों को लगातार नज़र रखते हुए उनकी देखभाल करने की ज़रूरत है।

ये वाइरस संक्रमित व्यक्ति या जानवर के खून, शरीर के स्रावों और शरीर के झिलके के साथ सीधे संबंध से फैलते हैं।

इससे संबंधित कुछ तथ्य है -

- अनुसंधानकर्ताओं द्वारा यह अनुमान लगाया गया है कि यह पशुजनित जीवाणु है।
- एबोला, परिवारों और दोस्तों के बीच जल्दी फैलने का खतरा है, जब वे खुल कर बीमार व्यक्ति की देखभाल करते हैं।
- महामारी के रूप में फैलने या एकाध व्यक्तियों में ये रोग पाये जाने के

मामलों में भी खुले में यह रोग किस तरह फैलता है, यह अस्पष्ट है।

- एबोला के फैलने के बाद लगभग २ से २१ दिनों के बीच रोग-लक्षण शुरू होते हैं।
- अचानक शुरू होनेवाला बुखार, तीव्र कमज़ोरी, पेशियों में दर्द, सिर दर्द आदि से ई.वी.डी को पहचाना जा सकता है।
- एबोला के लिए अभी तक कोई स्वीकृत टीका या दवाई उपलब्ध नहीं हैं।

सिद्धा डॉक्टरों का नीलवेम्बु द्वारा एबोला के फैलाव को रोकने का दावा.

तिरुनेलवेली : जानलेवा एबोला जीवाणु दुनिया में भयोत्पाद पैदा करते दौर में तमिलनाडु के पालयमकोट्टै (तिरुनेलवेली) के सरकारी सिद्धा अस्पताल के डॉक्टरों ने विश्वास जताया है कि प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा लोगों में रोग निरोधक क्षमता बढ़ाकर इस रोग के फैलने पर रोक लगाया जा सकता है।

उनके अनुसार नीलवेम्बु कुडिनीर (एन्ड्रोग्राफिस पनिक्युलाटा) और नेल्लिक्काय लेह्यम (फिलान्तस एम्ब्लिका) रोज़ लेने से न केवल एबोला वाइरस को दूर किया जा सकता है बल्कि चिकुन्गुनिया,डेंगु जैसे बीमारियों को भी रोक सकते हैं।

सरकारी सिदधा कॉलेज(जी एस सी) के पैथोलजी विभाग के डॉ शशि के अनुसार सिद्धा दवाइयाँ, शरीर के तीन प्रमुख घटक, वातम, पित्तम और कफम में एक निश्चित संतुलन बनाए रखते हैं। एक तन्दुरुस्त शरीर का मतलब है इन तीनों घटकों का एक निश्चित अनुपात में होना। इनमें से किसी का भी स्तर बढ़ने या घटने से बीमारी पैदा होती है।

ये स्थापित करते हुए कि - वायरल संक्रमण का कारण पित्तम का स्तर बढ़ना है - उन्होंने कहा है कि निलवेम्बु कुडिनीर और नेल्लिक्काय कषायम पित्तम स्तर के संतुलन को बनाये रखते हैं। हम, लोगों को, इसे निश्चित अवधि में लेने का उपदेश देते हैं। उसके साथ ही सिसेम (सिसेसम इन्डिकम), तेल में स्नान (सिद्धा डॉक्टरों द्वारा बतायी गई निश्चित प्रविधि का अनुसरण करते हुए) और कम्बनकूल जैसे पदार्थों को खाने की भी सलाह देते हैं।

यद्यपि यह स्थापित हो जाने पर भी कि ये सारी सावधानियाँ बरतने पर बीमारी को रोक सकते हैं, तथापि संक्रमित व्यक्ति की देखभाल बडी सावधानी से की जानी चाहिए।

उन्होंनो यह भी कहा कि: एबोला की शुरुआत में व्यक्ति को तेज़ बुखार, सिर दर्द और कमर दर्द का अनुभव होता है। दूसरे चरण में उस व्यक्ति को उल्टी, अतिसार और नेत्रों में जलन होता है। अंतिम चरण में बीमार व्यक्ति के फेफडे, नाक, मसूडे आदि में रक्तस्राव होता है और वह कई पेट-आंत की परेशानियों से पीडित होता है।

डॉक्टर ने कहा कि: दवाई का प्रभाव बीमार व्यक्ति की स्थिति पर निर्भर होता है। जो भी हो, ऐसी परिस्थितियों में पहला कदम यह होना चाहिए कि इस संक्रमण को रोकने केलिए बीमार व्यक्ति को अलग रखा जाए और नियंत्रित रोग परीक्षण किया जाए।

एबोला केलिए चिकित्सा संबंधी निश्चित क्रम को बताते हुए जी.एस.सी के सामान्य दवाई विभाग की डॉ चित्रा ने कहा कि- पहले चरण में हम लोग पवलमल्लि कषायम (निक्टेनन्तेस आरबर ट्रिस्टिस), नीलवेम्बु कुडिनीर, पवलापरप्पम, पिरमानन्द पैरवम,लिंगा चेन्दूरम (कोरोपीटा गयानेंसीस), सुदर्शना मदिरे और सीन्दिल (तिनोस्पोरा कोर्डिफोलिया) आदि दवाइयाँ देते हैं।

उन्होंने बताया कि, दूसरे चरण में प्रभावशाली इलाज होता है और बीमार व्यक्ति को चुण्डलवतल चूर्णम, कविकल चूर्णम और नन्नारी(हेमिडेस्मस इन्डिकस)खिलाया जाता है। बीमार व्यक्ति को नेत्रों में जलन होने पर रोज़ पतिकारा नीर और त्रिफला कषायम (कडुक्कै, तान्निक्काय और नेल्लिक्काय का मिश्रण) से आँख साफ करने की सलाह दी जाती है। अंतिम चरण में बीमार व्यक्ति को त्रिफला चूर्णम, सीन्दिल चूर्णम, अडातोडा कषायम (जस्टीश्या अडातोडा), अडातोडा कुडिनीर आदि खिलाया जाता है।

जी.एस.सी के डॉ उमा कल्याणी ने कहा कि : ''अगर बीमार व्यक्ति रक्ताणु(प्लेटलेट) की कमी से पीडित है तो उसको तिरट्षादि लेह्यम और नेल्लिक्काय लेह्यम जैसी दवाइयाँ देना चाहिए।''

(*साभार- अंग्रेज़ी मूल, द न्यू इन्डियन एक्सप्रेस', रविवारीय परिशिष्ट,१० अगस्त, २०१४)

(*साभार- अंग्रेज़ी मूल, द न्यू इन्डियन एक्सप्रेस')

हिन्दी अनुवाद- सुश्री रजुला.के.वी., शोध छात्रा, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी - ६०५ ०१४

कृति चर्चा

हिंदी साहित्य के इतिहास का लेखन मलयालम में..

- सुश्री रजुला के.वी.

डॉ वी.पी.मुहम्मदकुंजु मेत्तर मलयालम के ही नहीं बल्कि हिंदी, संस्कृत, अरबी और अन्य कई भाषाओं के प्रकांड पंडित तथा गवेषक, ग्रंथकार,विद्वान और अध्यापक भी हैं। उनका जन्म ५,सितंबर १९४६ को आलप्पुषा में हुआ। वे देश-विदेश के कई कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में अध्यापक रहे हैं।

मेत्तर जी द्वारा रचित एक महत्वपूर्ण ग्रंथ है हिंदी साहित्यचरित्रम्। ये हिंदी साहित्य के इतिहास पर मलयालम में लिखित पहली पुस्तक है। हिंदी साहित्य के इतिहास के बारे में हिंदी में लिखित पुस्तकों के समान इस पुस्तक में भी हिंदी साहित्य के आरंभिक काल से लेकर आधुनिक काल तक की काव्यधाराओं, काव्य- प्रवृत्तियों, काव्य रचनाओं, गद्य रचनाओं तथा रचनाकारों के बारे में विस्तार से बताया गया है। मेत्तर जी ने अपनी रचना शक्ति व विवेक का प्रयोग इस ग्रंथ में भरपूर किया है। इस पुस्तक की भाषा कुछ कठिन होकर भी सुव्यवस्थित है। हो सकता है हिंदी साहित्य प्रवृत्तियों की बातें मलयालम में स्पष्ट करने केलिए कुछ कठिन तकनीकी शब्दों का प्रयोग करना पड़ा हो। इस पुस्तक को पढ़ने से हमें पता चलता है कि इसकी रचना में ग्रंथकार ने आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी के ''हिंदी साहित्य का इतिहास'' जैसे महत्वपूर्ण ग्रंथों की सहायता ली है।

यहाँ रचनाकार ने अपना मत व्यक्त करते हुए बताया है कि हिंदी और उर्दू एक ही भाषा के दो रूप हैं। यहाँ उन्होंने दोनों भाषाओं की समानताओं को व्यक्त करते हुए यह बताया है कि आरंभ में हिंदी और उर्दू एक थे। उनका यह मत है कि इन भाषाओं के ज़रिए हिन्दू और मुसलमान धर्म के बीच दरारें पैदा करने में प्राचीन काल के साहित्यकारों का योगदान रहा है। उनका कहना है कि - ''बोलचाल के रूप में हिंदी और उर्दू लगभग समान है। सिर्फ लिखित रूप में इन दोनों भाषाओं में अंतर है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश के विभाजन के साथ-साथ हिंदी और उर्दू भी अलग-अलग हो गई। यह बड़े दुख के साथ कहना पड़ रहा है कि उस समय हिन्दू और मुस्लिम धर्म के साहित्यकारों ने जानबूझकर जिस तरह भाषा का प्रयोग किया, वह जनता के साथ-साथ इन

दोनों भाषाओं को भी अलग-अलग छोर पर खड़ा कर दिया।

आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल, और आधुनिक काल - इन चार कालों और इस काल के साहित्यिक प्रवृत्तियों के बारे में मेत्तर जी ने वही कहा है जो हिंदी के अन्य ग्रंथकार और इतिहासकारों ने कहा है। वे यह मानते हैं कि हिंदी में आज तक लिखे गए साहित्यिक ग्रंथों में प्रथम स्थान आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के ''हिंदी साहित्य का इतिहास'' को है।

आदिकालीन साहित्य की उत्पत्ति, विकास, साहित्यिक रचनाओं, प्रवृत्तियों तथा रचनाकारों के बारे में ग्रंथकार ने यहाँ विस्तार से बताया है।

इस प्रकार पूर्व मध्यकाल यानि भक्तिकाल के बारे में भी उन्होंने यहाँ चर्चा की है। लेखक भक्तिकाल का उदय मुस्लिम आक्रमण का परिणाम नहीं मानते हैं।

इस प्रकार हिंदी साहित्य का आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के बारे में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हज़ारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ.नगेन्द्र आदि इतिहासकारों के मतों का पक्ष लेते हुए मेत्तर जी ने इस पुस्तक की रचना की है। इन लेखकों का प्रभाव इस पुस्तक में हम देख सकते हैं।

यहाँ हिंदी साहित्य के साथ ही हिंदी भाषा का महत्व तथा भारत के बाहर विदेशों में हिंदी भाषा के प्रयोग के बारे में तथा हिंदी के क्षेत्र-विस्तार के बारे में भी मेत्तर जी ने एक अलग अध्याय ही जोड़ दिया है। हिंदी प्रदेशों में अर्थात न केवल भारत में मगर समूची दुनिया में सृजित हिंदी साहित्य का विवेचन हिंदी साहित्य के इतिहास ग्रंथों में हो, इसके पक्ष में बल देते हुए मेत्तर जी ने अपने इस ग्रंथ में उसे निभाया भी है।

इस पुस्तक को पढ़ने से कभी ऐसा लगने लगता है कि ये हिंदी में लिखित आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी के हिंदी साहित्य का इतिहास के जैसे किसी ग्रंथ का मलयालम में अनुवाद किया गया हो। ये इसलिए है कि ग्रंथकार, शुक्लजी जैसे इतिहासकारों के दृष्टिकोण तथा मतों को मानते हैं।

हिंदी साहित्यचरित्र के बारे में मलयालम में लिखित यह पहला ग्रंथ हिंदी के सभी छात्र-छात्राओं और मलयालम के, हिंदी को चाहनेवाले पाठकों केलिए तथा हिंदी साहित्यजगत के बारे में जानने केलिए उत्सुक सभी केलिए एक सहायक ग्रंथ हैं।

हिंदी साहित्यचरित्रम् - डॉ.वी.पी.मुहम्मदकुंजु मेत्तर

प्रकाशन वर्षः २०१४, पृष्ठः ३६४, मूल्यः २००, प्रकाशकः समन्वय प्रकाशन,आलप्पुषा ।

शोध छात्रा, हिंदी विभाग, पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी - ६०५ ०१४

(पृष्ठ १९ से...)

प्रशिक्षण दिया गया. इन सभी स्थानों के बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया इनमें सबसे अधिक उत्साही गाजिंद एवं चोरल के बच्चों ने अपना स्थान बनाया.

श्री अष्ठाना ने बताया कि वर्षों से शहर से दूर इस छोटे से ग्राम में सामाजिक जागरण का जो कार्य चल रहा था उसे आज प्रत्यक्ष देखने का अवसर मिला. अनेक अभाव एवं कठिनाइयों के बावजूद उन्होंने यह रूप खड़ा किया है. नया प्रारंभ हो रहा संस्कार केन्द्र नई पीढ़ी को नई दिशा देगा, ऐसा मेरा विश्वास है. व्यवस्थापकों को साधुवाद, अनेक शुभकामनाओं के साथ. जैन इंजीनियर्स सोसायटी के श्री राजेन्द्र जैन ने कहा कि आन्तर भारती बिरादरी का इतिहास जानना तथा सतत संपर्क में रहकर योगदान देने का मानस भी बना है. श्री उमराव सिंह डांगी ने बताया कि भारत निर्माण की दिशा में किया जा रहा प्रयास एक दिन भव्य रूप ले लगा. सराहनीय पहल के लिए बधाई एवं आर्थिक सहयोग भी संस्था को देना स्वीकार किया. श्री एच.आर.गुलाटी ने बताया कि समाज में परिवर्तन और सांस्कृतिक क्रान्ति में यह योगदान अतुलनीय है. श्री निर्मल संचेती ने अपने पिताजी की पुण्य स्मृति में सभी बच्चों को लेखन सामग्री के उपयोगी साधनों के किट बांटे व सदैव संस्था को सहयोग देने का अभिवचन भी दिया. श्री विजयसिंह भरकतिया ने संस्कार कक्षा का दीप प्रज्वलित किया एवं आर्थिक सहायता देने का भी आश्वासन दिया. इस अवसर पर उपस्थित सेवा संस्कार केन्द्र के अध्यक्ष श्री महेन्द्र कुमार बड़जात्या ने यहां प्रति रविवार नागरिकों के चिकित्सार्थ अस्पताल चालू करने की घोषणा की.

सेवा संस्कार केन्द्र के प्रबन्धकगण सर्व श्री मानसिंह जैन, संतोष गोधा, विनय कुमार काला, महावीर कुमार बड़जात्या, सतीश कुमार बंडी, निर्मल कुमारसेठी,शांतिलाल जैन, एच.आर.गुलाटी, सुरेशचंद्र सेठी, मनोज तिवारी एवं निर्मलकुमार सोनी ने भी उपस्थिति दर्ज करवाई.

आन्तर भारती बिरादरी के सहयोगी सर्व श्री सम्पत सिंह, मानसिंह मेहता, अशोक डांगी, प्रियकुमारशर्मा, दिनेश गांधी, संजय खंडेलवाल, मुकेश जैन, निलेश भंडारी, आरिफ खान एवं परिजन तथा बाईग्राम के पूर्व सरपंज श्री शंकर तथा गाजिंदा शासकीय माध्यमिक विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्री नन्दराम सागौरे, संदीपनी फाउंडेशन के बच्चे एवं शिक्षक वर्ग तथा सिमरोल के श्री

आत्माराम पाटीदार (पूर्व सचिव पंचायत) एवं पुजारी मोतीराम बाईग्राम तथा ग्रामीण जन उपस्थित रहे. ''देवपुत्र पत्रिका'' का वितरण श्री अष्ठाना ने किया. लगभग सभी व्यक्ति सपत्निक आये. पौधारोपण (नीम व गुलमोहर) भी कु.पूजा व गायत्री ने किया.

चयनित बच्चां ने अपने परिचय के साथ-साथ देशभक्ति गीत, घोषणाएं (नारे), नमस्कार मंत्र, ईश प्रार्थना, सामूहिक रूप से की एवं अतिथियों को स्वागत अनुशासन मंत्री (व्यवस्थापिका) कु.ममता ने कुमकुम एवं अक्षत से किया.

श्री महेन्द्र मुणोत (किड्स हेवन) के संस्थापक ने भी आर्शीवचन दिये. यह प्रारंभ से ही आन्तर भारती बिरादरी के विकास कार्य के प्रभारी रहे है. कार्यक्रम का संचलन श्री दिलीप मिश्रा (वरिष्ठ पत्रकार) ''इन्दौर समाचार'' ने किया. आभार सेवा संस्कार केन्द्र के श्री मनोहरसिंह जैन (संस्थापक सदस्य) ने माना. संस्था की ओर से स्मृति श्रीमती सीमंतिनी सरदेसाई (न्यासी) ने दिये. संस्थागत जानकारी (प्रथम न्यासी) श्री प्रतापसिंह डांगी ने दी. स्वागत भाषण श्री शरद बुलाख ने दिया. प्रबन्ध न्यासी श्री सुमित कुमार जैन, श्री सुभाष डांगी तथा दिलीप बिरानी (न्यासी) व श्री राजेन्द्र जैन भी विशेष रूप से उपस्थित रहकर सभी मेहमानों को भोजन/नाश्ता इत्यादि कार्य में भी सहभागिता की.

- प्रतापसिंह डांगी

मंचपर दायें से श्री महावीरकुमार बडजात्या, श्री कृष्णकुमार अष्ठाना, श्री विजयसिंह भरकतिया, श्री राजेन्द्र जैन, श्री मनोहर सिंह जैन आन्तर भारती बिरादरी परिसर बाईग्राम, जि.इन्दौर

समाचार भारती-२

महाराष्ट्र अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति की विस्तारित कार्यकारिणी बैठक विवरण

महाराष्ट्र की सोलापुर जिले के माळीनगर ग्राम में कार्यकारिणी की बैठक जून के प्रथम सप्ताह में संपन्न हुई. बैठक का उद्घाटन सासवड माळी शक्कर कारखाने के अध्यक्ष माननीय कृष्ण कान्त कोळे ने यिवका. बैठक में राजेन्द्र गिरम तथा प्रसिद्ध नाट्य दिग्दर्शक मान्य अतुल पेठे भी उपस्थित थे. बैठक का प्रास्ताविक सोलापुर जिले के अन्धश्रद्धा निर्मूलन समिति के अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मुकाशी ने किया और स्वागत सोलापुर जिले के कार्याध्यक्ष सुधार कौशिक ने किया. बैठक की अध्यक्षता महाराष्ट्र अंनिस के कार्याध्यक्ष अविनाश पाटिल ने किया. बैठक में चर्चोपरान्त निम्न निर्णय हुए.

१. संगठन निर्मिती -

अ) अकोला के महादेवराव को विदर्भ के प्रतिनिधि के रूप में राज्य उपाध्यक्ष पद पर चुना गया.

ब) जुलाई महीने में रविवार के दिन जिला समितियों की बैठक ली जाय जिसमें विभागीय सचिव उपस्थित रहेंगे. यह कार्य जिले के मुख्य सचिव तुरन्त करेंगे.

क) सितम्बर अन्ततक जिले के कार्याध्यक्ष एवं मुख्य सचिव सभी शाखाओं का निरीक्षण करेंगे.

ड) वर्षान्त में जिला कार्यकारिणी का कार्यकाल समाप्त होगा अतः नवीन सदस्य निर्मिती तथा शाखा कार्यकारिणी की निर्माण प्रक्रिया १५ जनवरी तक पूरी कर फरवरी मार्च २०१५ में होनेवाले जिला स्तरीय वार्षिक प्रेरणा व संकल्प मेले में आगामी दो वर्ष के लिए जिला कार्यकारिणी समिती का निर्वाचन किया जाए ऐसा निश्चय हुआ.

२) बुआबाजी संघर्ष -

अ) जादूटोना विरोधी कानून के अन्तर्गत कुल ६५ प्रकरण पंजीकृत हुए हैं. जिसमें सातारा, धयुलिया, नंदुर्बार, लातूर, औरंगाबाद इत्यादि जिले छोडकर सभी जिलों में प्रकरण दाखिल हुए हैं. नासिक जिले में सर्वाधिक सात प्रकरण हुए हैं.

ब) जादूटोना विरोधी कानून की समझ नागरिकों में उत्पन्न करने के लिए तथा शिकायते दर्ज कर लेने के लिए एवं मार्गदर्शन करने के लिए निःशुल्क संपर्क फोन क्रियान्वित किया जाए.

क) कानून के क्रियान्वयन सहयोग व मार्गदर्शन के लिए राज्य स्तरीय क्रियाशील कार्य समूह बनाया जाय. जिसमें वकील एवं तज्ञ व्यक्ति हों.

ड) नासिक में २०१५ में कुम्भ मेले से संबंधित जन सुनवाई ली जाय.

इ) कुम्भ मेले के समय अगस्त २०१५ तक वार्तापत्र का विशेषांक निकाला जाए.

ई) देश में होनेवाले चुनावों की पृष्ठभूमि पर फलित ज्योतिविषयों के आव्हान प्रक्रिया के बारे में जानकारी दी गई. किसी ने भी यह आव्हान स्वीकारा नहीं.

३. विविध उपक्रम -

अ) सर्प विज्ञान प्रबोधन सप्ताह विसर्जित मूर्ति व निर्माल्य दान अभियान, पटाके मुक्त दिवाली का अभियान, व्यसन विरोधी संकल्प सप्ताह, संविधान निष्ठा महोत्सव, राष्ट्रीय विज्ञान दिन, पर्यावरण पूरक होली, नवरात्री निमित्त, स्त्री शक्ति प्रबोधन, १ नवम्बर को शहीद डॉ.नरेन्द्र दाभोळकर का जन्म दिन - युवा संकल्प दिन, महात्मा ज्योतिराव फुले स्मृति दिन व महामानव डॉ.बाबा साहब अंबेडकर जयन्ति के निमित्त ११ से १४ अप्रैल तक अभिवादन सप्ताह, २० अगस्त डॉ.नरेन्द्र दाभोभकर स्मृति दिन, बकरी ईद के निमित्त रक्त दान शिविर आदि उपक्रम निश्चित किए गए. जिसमें से कमसे कम ३ उपक्रम राज्यस्तर पर किए जाए ऐसा निश्चय हुआ.

ब) अन्धश्रद्धा निर्मूलन साहित्य सम्मेलन अगस्त २०१५ में अंनिस वार्ता पत्र के रजत जयन्ति वर्ष के निमित्त आयोजित किया जाएगा.

क) विज्ञान बोध वाहिनी - १. दान व ब्याज रहित निधि जमाकर, डिजिटल तारामंडल खरीदा जाय ऐसे मत कार्यकर्ताओं ने व्यक्त किए. जिस पर प्रयत्नपूर्वक कार्यवाही करने का निश्चय व्यक्त किया गया. २. मनोरंजनात्मक विज्ञान कार्यक्रम का प्रस्तुतिकरण दो प्रशिक्षित कार्यकर्ताओं को मानधन देकर दुपहिया वाहनों पर जाकर किया जाए ऐसा निश्चय किया गया.

४. वैज्ञानिक प्रतीति प्रकल्प -

अ) वैप्रके शिक्षक शिविर महाराष्ट्र के नागपुर, अमरावती, नांदेड, सोलापुर, बीड, अहमदनगर, औरंगाबाद, सांगली, कोल्हापुर, लातूर सातारा, नासिक, धुलिया व नंदुर्बार जिल्हों में एक एक प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षकों के शिविर होंगे. इनके विषय होंगे मन, मन के रोग, वैज्ञानिक दृष्टिकोन चमत्कार व विज्ञान, स्त्रियाँ और अंधश्रद्धा, सर्प, गलतफहमी इत्यादि.

ब) इनके अतिरिक्त दो प्रकार के वैप्र शिक्षक शिविर तीन-पांच प्रायोगिक तत्व पर तथा कानून प्रशिक्षण शिविर सौ-सौ विद्यार्थियों के महाराष्ट्र के ६ विभागों में लेने का निश्चय हुआ.

क) केन्द्रीय कार्यालय द्वारा प्रश्नपत्रिका व प्रमाणपत्र मंगवाकर सभी शाखाओं में स्वयं अध्ययन परीक्षाओं का आयोजन करें.

५. युवा सहभाग -

अ) महाराष्ट्र के युवाओं के लिए विभागीय स्तर पर बैठकें लेकर उन्हें अवसर दिया जाय.

ब) राज्यस्तर पर वर्ष में दो बार युवा प्रशिक्षण शिविर लिए जाए.

६. महिला सहभाग -

अंनिस के रौप्य वर्ष पूर्ति के निमित्त महिला सहभाग के कार्यक्रम आयोजित किए जाए.

७. सांस्कृतिक विभाग -

अंनिस के कार्यकर्ताओं द्वारा चक्र नाट्य का प्रयोग पुणे में किया जाएगा. इस संदर्भ में इस्लामपुर व कोल्हापुर में संपन्न कार्यशाला की तरह जळगाव और लातूर में भी करने का निश्चय हुआ.

८. प्रकाशन, वितरण विभाग -

प्रकाशन विभाग को व्यावसायिक स्तर पर बढाया जाय. जात-पंचायत विरोधी लड़ाई पंजीकृत प्रकरण, कानून की कथा, कानून मार्गदर्शिका व डॉ. नरेन्द्र दाभोळकर का चरित्र तथा वार्तापत्र में प्रकाशित श्री दाभोळकर के चुयनित लेखों का संपादित संग्रह प्रकाशित करने का निश्चय हुआ.

इसके अतिरिक्त वार्तापत्र संपादन व वितरण, राष्ट्रीय अनुसंधान, दस्तावेज संकलन, संकेत स्थल व्यवस्थापन, विचार कृति पत्रिका, केन्द्रीय कार्यालय व्यवस्थापन मानस मित्र प्रकल्प, दाभोळकर विचार कृति महोत्सव जात-पंचायत विरोधी अभियान, दाभोळकर खून प्रकरण. दाभोळकर कार्यकर्ता प्रशिक्षण केन्द्र, रोप्य वर्ष पूर्ति कार्यक्रम व अन्य प्रासंगिक विषयों पर विचार विनिमय एवं निर्णय हुए जिसमें राज्य कार्याध्यक्ष अविनाश पाटिल के लिए वाहन खरीदी का भी निर्णय हुआ.

हिन्दी प्रस्तुति - डॉ.मधुश्री आर्य

समाचार भारती-३

आधुनिक समाज में व्यक्ति जोड़नेवाले समर्पित शिक्षक की आवश्यकता

गुणीजनों का गौरव - आन्तर भारती के राष्ट्रीय सचिव सदाविजय आर्य का प्रतिपादन, अंबाजोगाई शाखा की तरफ से प्राचार्य डॉ.बी.आय.खडक का सत्कार.

पुराने जमाने में देश परिभ्रमण के बहाने गुरू विद्यार्थियों पर सुसंस्कार डालने का काम करते थे. क्योंकि विद्यार्थी बहुश्रुत हो इसके लिए गुरूजी की कोशिश होती थी. ऐसी ही कोशिश साने गुरूजी ने अपने विद्यार्थियों के लिए की थी. यही प्रामाणिक कोशिश खडकभावी जैसे शिक्षकों में दिखती है. इसीलिए आधुनिक समाज व्यवस्था में खडकभावी जैसे समर्पित शिक्षकों की आवश्यकता है. ऐसे

प्रतिपादन आन्तर भारती के राष्ट्रीय सचिव प्राचार्य सदाविजय आर्य ने किया. वे

१५ अगस्त सायं ६ बजे शहर के आदिकवि मकुंदराज सांस्कृतिक सभागृह में आन्तरभारती शाखा की तरफ से डॉ.बी.वाय.खडकभावी के सत्कार हेतु आयोजित समारोह को संबोधित कर रहे थे. अध्यक्ष स्थान पर गणपतराव व्यास थे. व्यासपीठ पर ज्येष्ठ कार्यकर्ता नंदकिशोर मुंदडा, राजकिशोर मोदी, संयोजक अमर हबीब, पत्रकार प्र.नासाहेब गाहाळ, मुख्याध्यापक प्रतिभा देशमुख आदि उपस्थित थे. इस अवसर पर प्राचार्य खडकभावी को स्मृतिचिन्ह सम्मान पत्र तथा ग्रंथ भेंट देकर अमरहबीब के हाथ से मान्यवर का सपत्नीक सत्कार किया गया.

आर्य ने कहा आदर्श व्यक्तित्व को ढूंढना कठिन काम है. कारण समाज में ऐसे व्यक्ति दुर्मिल होते जा रहे हैं. ऐसे आदमियों को जोड़े बिना कुछ भी जोड़ नहीं सकते. इन्सानियत जीवित रखनी हो तो शिक्षकों को आत्मसमर्पण की भावना से काम करना चाहिए. शिक्षक शिक्षण व्यवस्था से दूर होता जा रहा है. हर बात के लिए राजकारण को दोष देना ठीक नहीं. शिक्षण प्रणाली बदलने की जगह शिक्षक बदलना जरूर है. आन्तर भारती हृदय की भाषा बोलती है. ऐसा वे बोले. इस अवसर पर प्रतिभा देशमुख ने प्रस्तावनी की. अमर हबीब ने कार्यक्रमों के आयोजन की जानकारी दी. और प्रा.गाठाळ, मंदडा तथा मोदी और विद्यार्थियों नें अपने विचार प्रकट किए. संचालन गोविन्द महाराज केन्द्रे और दत्ता बालेकर ने आभार माना. अंकुशराव काळदाते, शेख जमाल बाशाभाई, दादासाहेब कसबे, ख्वाजा नझिमोद्दीन, दत्ता बालेकर ने कार्यक्रम यशस्वी बनाने के लिए परिश्रम किया. इस अवसर पर शहर के शिक्षक गण, सांस्कृतिक, सामाजिक, राजकीय, वैद्यकीय, अभियांत्रिकी क्षेत्र के मान्यवर, महिला, नागरिक, युवावर्ग आदि बड़ी संख्या में उपस्थित थे.

अनेकों के प्रति कृतज्ञता - मैंने अभीतक कोई बड़ा काम नहीं किया. मुझे अच्छे विद्यार्थी मिले उनका सहकार्य अच्छा मिला. संस्था ने तथा अंबाजोगाईवासियों ने बहुत सहकार्य किया. स्वर्गीय लोकनेता विलासराव देशमुख, डॉ.विमल मंदडा एवं राजकिशोर मोदी, नंदकिशोर मुंदडा ने शैक्षणिक क्षेत्र में समय समय पर सहकार्य किया. इस सत्कार की योग्यता रखने की जिम्मेदारी बढ गई है कहकर राष्ट्रपति पुरस्कार की अपेक्षा यह पुरस्कार मेरे लिए बड़ा है ऐसा भावना प्रधान उद्‌गार प्राचार्य खडकभावी ने इस अवसर पर प्रकट किए.

(छायाचित्र - मुख पृष्ठ पर) **हिन्दी प्रस्तुति : डा.मधुश्री आर्य**

समाचार भारती-४

सुलह - हिन्दु-मुस्लिम एकता के लिए 'बाबरी ते कणेरी' लेखक - हुमायुन मुरसल

''असा ही पाकिस्तान'' - लेखक अरविन्द गोखले पुस्तक विमोचन समारोह

स्थान - एस.एम.जोशी सोशालिस्ट फाउण्डेशन, नवी पेठ, पुणे
दि.१० अगस्त २०१४, प्रातः ११.00 बजे
मनुष्यता जपने वाला आंदोलन : सामंजस्य (सलोखा)
मुख्य अतिथि - डॉ.नरेश दधिच (संचालक आयुक्त पुणे)
वक्ता - नवाब मलिक (प्रवक्ता राष्ट्रवादी काँग्रेस)
अध्यक्ष - कुमार केतकर (ज्येष्ठ संपादक, विचारवंत)
प्रास्ताविका - गुजरात राज्य भाजप तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ की एक प्रयोगशाळा (राजकीय) है. इसी कारण गोध्रा हत्याकांड किया. मुस्लिम समाज यह देश का शत्रु है. जातीयवादी फॅसिष्ट प्रवृत्ति के लोगों ने बाबरी मस्जिद गिराई. देश में दहशतवाद बमस्फोट के लिए मुस्लिम समाज जिम्मेदार है. मुस्लिम समाज के अन्याय को व्यक्त करने की आवश्यकता है. देश के धर्मनिरपेक्ष (सेक्यूलर) शक्ति मुसलमानों का पक्ष नहीं लेता. हिन्दु मुस्लिम समाज का मनमुराद कम करके समाज में सुसंवाद स्थापित हो यही इस सुलह की भूमिका है.

लेखक - हुयायून मुरसल के विचार (बाबरी के कणेरी) (वर्ष १९८५ से वर्ष २०१४ तक का काल)

जातिवादी तथा फॅसिस्ट प्रवृत्ति की शक्ति ने महाराष्ट्र के प्रगतिशील भागों में मुस्लिमों पर अत्याचार करना चालू रखा. इन दिनों उत्तर प्रदेश में बड़ी संख्या में जातीय झगड़े हुए. भाजप संसद सदस्यों वाले भूभाग में दंगल होते हैं. खास करके दलित और मुस्लिमों को लक्ष्य (टारगेट) किया जाता है. हम हमारे अस्तित्व के लिए लड़ते हैं. पर सही तो यह है कि राजकीय सत्ता में लोकसंख्या के प्रमाण में मुसलमानों को जगह चाहिए. कम से कम मानवीय हक्क उन्हें मिलने चाहिए. लोकशाही, धर्मनिरपेक्षता (सेक्यूलर स्टेट कन्झेष्ट) टिकनी चाहिए. बहूजनों को इस बारे में सजग रहना चाहिए.

नीतिमत्ता, सामाजिक बन्धुत्व लोप हो रहा है. प्रमुखों के पक्ष में (राजकीय)नियंत्रण नहीं है. भाजपा, शिवसेना, काँग्रेस, राष्ट्रवादी काँग्रेस, राजकारण में संधी साधूपन से एकदूसरे को मदद करते हैं.

नरेश दधिच - भाषण

स्वतंत्रता के बाद सही तो इस देश का नाम भारत के बजाय 'हिन्दुस्तान' ऐसे युक्तियुक्त

होने चाहिए थे. हिन्दु जीवन शैली मुस्लिम जीवन शैली कि अपेक्षा अच्छी है. ऐसा शोर किया जाता है. सत्य यह परम सत्य नहीं होता. आधुनिक विज्ञान ने नई दिशा दी है. तर्क संगत विश्लेषण करने के लिए विज्ञान से मदद मिलती है. आधुनिक विज्ञान और भारतीय मानस का विचार करने पर पता चलता है कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण दैनिक व्यवहार में नहीं आता. यहाँ अंधश्रद्धा की भरमार है. यह एक दुःख की बात है.

स्वतंत्रता, समता, भाईचारा और धर्मनिरपेक्षता के मूल्य संविधान में है. मनुष्य स्वभाव में मतभिन्नता होना सहज प्रवृत्ति है. फिर भी संसद विधानसभा में बहुमत से लिए गए निर्णय सबकि मनःपूर्वक स्वीकारने चाहिए.

नवाब मलिक - (राष्ट्रवादी काँग्रेस प्रवक्ता) अपने भाषण में रक्षाबन्धन की शुभकामनाएँ दी. धर्माधिष्टित राजनेताओं ने समाज में हिन्दु मुस्लिम सांप्रदायिकता फैलाने का जानबूझकर प्रयत्न किया है. बाबरी मस्जिद प्रकरण धार्मिक उलझन पैदा करने के लिए है. सन् १८५७ की स्वतंत्रता की लडाई समाज के सब लोगों ने प्रभावी ढंग से लड़ी देश स्वतंत्र होने के बाद भारत-पाकिस्तान विभाजन हुआ. धर्म के नाम से राजनीति करने के लिए बाबरी मस्जिद गिराई गई. मुस्लिम समाज के बारे में जो गैरसमझ दूर करनी चाहिए, धर्म के नाम पर मत नहीं मांग सकते. मुस्लिम धर्म की उदात्त मानव मूल्यों की सीख (कुरान शरीफ) समाज को समझाने की आवश्यकता है. लोगों को दिशाहीन करने का प्रयत्न किया जाता है. आपस में द्वेष मत्सर कम होना चाहिए. 'जिहाद' का सही अर्थ 'संघर्ष' है. धर्मयुद्ध नहीं. अपने चरित्र सुधारने चाहिए. पडोसीधर्म, सामाजिक सौहार्द्र और मित्रता बढ़नी चाहिए. अखिरकार धार्मिक भेदभाव कम होकर समाज में भाईचारा व मित्रता बढ़नी चाहिए.

कुमार केतकर (अध्यक्षीय भाषण) - देश की स्वतंत्रता के समय से हिन्दु महा सभा को देश के मतदारों ने कभी प्रतिसाद नहीं दिया. मुस्लिमों का वाहियात प्रार्थना काँग्रेस पक्ष की तरह शुरू में लोकमान्य तिलक ने सशर्त की थी. सन् १९५२ के सार्वजनिक निर्वचन के बाद काँग्रेस पक्ष सत्ता में आया १९९० में लालकृष्ण अडवानी ने राजनैतिक कारण से देश में रथयात्रा निकाली. लालू प्रसाद यादव ने बिहार में रथयात्रा रोकी. उसके बाद वी.पी.सिंग की सरकार अल्प संख्याके कारण गिराई गई. तब से देश में सही अर्थ में, मानसिक रीति से 'वैचारिक बदलाव' अडवानी की रथयात्रा से शुरू हो गया. अमित शहा खून का आरोपी है. बाबरी मस्जिद तक देश कैसे आया? गोध्रा मुस्लिम हत्याकांड की वजह से व्यथित होकर अटल बिहारी वाजपाई ने मोदी को कम से कम राजधर्म पालना चाहिए ऐसा कहा. यद्यपि नरेन्द्र मोदी बंधे हुए नहीं है. नरेन्द्र मोदी जब मुख्यमंत्री थे तत्कालीन प्रधान मंत्री अटलबिहारी बाजपई गुजरात दौरे पर गए तब नरेन्द्र मोदी

उस कार्यक्रम में अनुपस्थित थे. इससे सिद्ध होता है कि मोदी शिष्टाचार नहीं निभाते. आजकल देश 'राजनैतिक विभाजन' की दिशा में जा रही है. शायद कुछ काल के बाद खंडित भारत देश में फिर से दूसरी बार भौगोलिक विभाजन होगा. देश में महंगाई, भ्रष्टाचार को अनुपूरक होते हुए भी बढ़ गई है. आज लोगों को हिन्दु कहकर बदलाव (चेंज) चाहिए. हिन्दुओं के कब्जे से हिन्दुओं का कंसोलिडेशन होते ही सब समाज के घटकों पर हिन्दुत्वका कब्जा होगा. रा.स्वं.सं.स्थापना को १२५ वर्ष हो गए. काँग्रेस पक्ष उसके पहले का है. देश के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू धर्मनिरपेक्ष, वैज्ञानिक दृष्टिकोण पालनेवाले, सुधारविवादी दृष्टि के नेता थे. 'नेहरूवाद' एक खास छवि नेहरू जी की थी. आर.एस.एस. और नरेन्द्र मोदी का नेहरूवाद आयडयोलॉजी पूरी तरह से नष्ट करने का जानबूझकर प्रयत्न शुरु है. भारतीय संविधान में सुसंगत लगाने का प्रयत्न शुरु है. फंडामेन्टलिझम, टेरारिजम आदि संकल्पना सन १९८० में नहीं थी. सिर्फ खलिस्तान का आंदोलन पंजाब में हुआ. यह सिक्ख को आतंकवाद था १९८० से १९८४ तक धार्मिक उन्माद बढा हुआ था.

देश में प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रानिक मीडिया (लोकतंत्र का चौथा स्तंभ) प्रभावी नहीं. देश में सारे न्यायालयों में तकरीबन तीन करोड प्रकरण न्याय के अभाव में प्रलंबित हैं. माया कॉडनानी इस महा खूनी ने (१७ खून करनेवाले का) न्यायालय ने किस तरीके से जामिन दी. इस प्रसंग पर मिडिया चुप है.

इन दिनों पाकिस्तान में तकरीबन २०००० आतंकवादी मारे गए. पाकिस्तान में हिन्दु धार्मियों के सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक त्योहार उत्सव होते हैं. काँग्रेस ने (पहले) महत्वपूर्ण निर्णय लाहौर, कराची में स्वतंत्रता के पहले निर्णय लिए थे. सचमुच के सेल्यूलर मनुष्य ने पाकिस्तान के भाग्य विधाता बॅ.जीना पसन्द आते हैं. बॅ.जीना सेक्युलर, विज्ञानवादी तथा सुसंस्कृत थे.

नरेन्द्र मोदी के पद ग्रहण करके तीन महीने हो गए. उनके कार्यकाल के शेष ५७ बचे हुए महीनों में देश का क्या होगा यह कह नहीं सकते. १९९२ से पुरोगामी सब स्तरों पर हार रहे हैं.

अन्त में पुस्तक को शुभेच्छा दी. समकालीन प्रकाशन के सुहास कुलकर्णी को उनके सहकार्य के बदले में भेंट वस्तु देकर सत्कार किया.

सलोखा प्रकाशन की तरफ से उपस्थित लोगों का आभार माना. सभागृह श्रोताओं से भरा हुआ था. मुस्लिमों को छोड़ कर बड़ी संख्या में अन्य लोग उपस्थित थे. डॉ.बाबा आढाव जैसे अनेक मान्यवर श्रोता थे.

मूल मराठी : गंगाधर घुमाडे **हिन्दी प्रस्तुति : डा.मधुश्री आर्य**

राष्ट्रीय युवा योजना द्वारा आयोजित

आन्तर भारती अन्तर्राष्ट्रीय बाल आनंद महोत्सव

लेहरग्गा (पंजाब) में

8 से 12 वर्ष के बच्चों के लिए अनुपम अवसर

20 नवंबर से 24 नवंबर 2014 तक

(19 को पहुंचे 24 को शाम से लौटें)

आने की सूचना 30 अक्टूबर 2014 तक अवश्य दें

संपर्क

डा.एस.एन.सुब्बराव
निदेशक राष्ट्रीय युवा योजना
09810350404
01123222329
221, दी.द.उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली 110002
nypindia@gmail.com

कँवलजीत ढिंढसा
मो.09417025498
सोएबा स्कूल
लेहरग्गा - 148031
जि.संगरुर (पंजाब)
kawalseaba@yahoo.com

नोट : लेहरग्गा, लुधियाना-जाखल रेल्वे मार्ग पर है दिल्ली से भी रेल उपलब्ध हैं,

संभवतः जाखल स्टेशन से स्कूल बसें भी ले जाएंगी. कठिनाई हो तो मो. 09823156777 से भी संपर्क करें